मुद्रा के मूल्य में सामान्यतया परिवर्तन होता रहता है जिनका देश के उत्पादन, उपभोग, वितरण और रोजगार पर अत्यन्त व्यापक प्रभाव पड़ता है। मुद्रा मूल्य में परिवर्तन दोनों दशाओं में हो सकता है। जब सामान्य मूल्य-स्तर में वृद्धि अर्थात् मुद्रा के मूल्य में कमी आती है तो इसे मुद्रा-प्रसार या मुद्रा-स्फीति कहते हैं। इसके विपरीत, जब सामान्य मूल्य-स्तर में कमी आने से मुद्रा के मूल्य में वृद्धि होती है तो उसे मुद्रा संकुचन या मुद्रा-अस्फीति कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था में मूल्य-स्तर में होने वाले परिवर्तनों के मुख्य चार रूप होते हैं—(i) मुद्रा-प्रसार, (ii) मुद्रा-संकुचन, (iii) मुद्रा-संस्फीति और (iv) मुद्रा-विस्फीति या मुद्रा-अवस्फीति।

मुद्रा-प्रसार या मुद्रा-स्फीति
(INFLATION)

परिभाषा (Definition)—शब्दकोष के अनुसार अंग्रेजी भाषा के Inflation शब्द का अर्थ है 'फैलाव या वृद्धि'। जब फुटबाल के ब्लैडर में हवा भरी जाती है तो वह 'इन्फ्लैट' होता जाता है अर्थात् फैलता जाता है। इस प्रकार कीमत-स्तर के सम्बन्ध में 'इन्फ्लेशन' का अर्थ कीमतों में होने वाली निरन्तर वृद्धि है। सामान्यतः कीमत-स्तर में होने वाली निरन्तर वृद्धि को मुद्रा-स्फीति (Inflation) कहा जाता है।

मुद्रा-स्फीति की सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है। अब तक विद्वानों ने मुद्रा-स्फीति की बहुत-सी परिभाषाएं दी हैं जिनका मोटे तौर पर हम दो शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन कर सकते हैं जैसा कि नीचे दिये चार्ट में दर्शाया गया है :

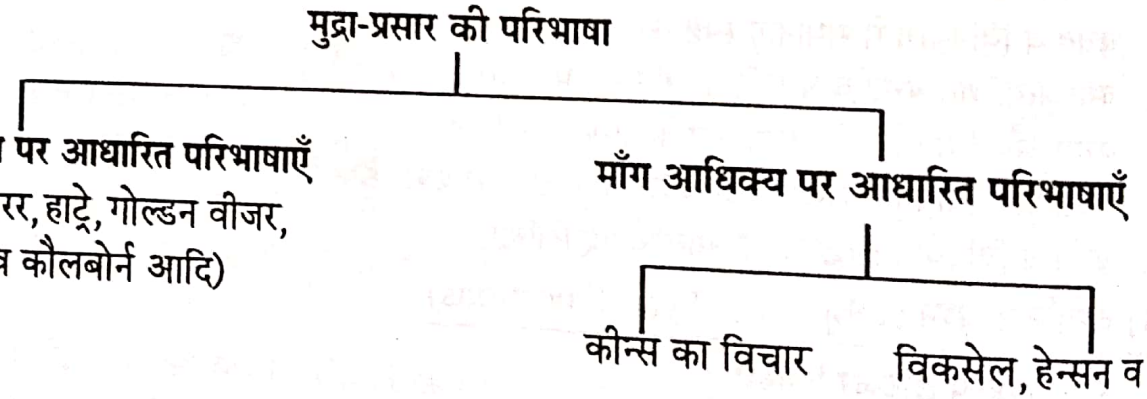

(I) मुद्रा परिमाण सिद्धान्त पर आधारित परिभाषाएँ (Definitions based on Quantity Theory of Money)

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त पर जो परिभाषाएँ आधारित हैं, वे मुद्रा-स्फीति को मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होने का परिमाण मानती हैं। क्राउथर, कैमरर, हाट्रे, ग्रेनरी, गोल्डेन वीजर और फ्रीडमैन आदि अर्थशास्त्री मुद्रा-स्फीति को एक विशुद्ध मौद्रिक घटना मानते हैं।

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त के दृष्टिकोण पर आधारित कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

(1) **कैमरर** के अनुसार, "मुद्रा-स्फीति की अवस्था उस समय विद्यमान होती है, जबकि एक ओर तो मुद्रा की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है और दूसरी ओर, वस्तुओं तथा सेवाओं की मात्रा बहुत कम हो जाती है।"[1]

1 "Inflation is too much currency in relation to the physical volume of business being done." —Kemmerer

Scanned with CamScanner

(2) **क्राउथर** के अनुसार, "मुद्रा-स्फीति वह परिस्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिरता है अर्थात वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं।"[1]

(3) **हाट्रे** के शब्दों में, "वह परिस्थिति जिसमें मुद्रा का अत्यधिक निर्गमन हो, मुद्रा-स्फीति कहलाती है।"[2]

(4) **मिल्टन फ्रीडमैन** के अनुसार, "कीमतों में सुस्थिर एवं अविरत होने वाली वृद्धि मुद्रा-स्फीति है।"[3]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मुद्रा-स्फीति कीमत-स्तर के निरन्तर बढ़ने की प्रक्रिया है।

(II) माँग आधिक्य या अतिरेक पर आधारित परिभाषाएँ (Definitions based on Excess Demand)

विकसेल, वेन्ट, वेन्सन, कीन्स व टर्वे आदि अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा-स्फीति की परिभाषा माँग आधिक्य के रूप में दी है। माँग आधिक्य विश्लेषण के अनुसार जब कभी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए प्रभावपूर्ण माँग अधिक होती है और चालू बचतों पर उपलब्ध पूर्ति के द्वारा उसे पूरा नहीं किया जा सकता तो स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

पीगू और कीन्स की दृष्टि में मुद्रा-स्फीति कीमतों में वह वृद्धि है जो पूर्ण रोजगार की अवस्था में पहुँचने के बाद पैदा होती है। वे सभी प्रकार की कीमतों की वृद्धि को मुद्रा-स्फीति नहीं मानते।

कीन्स ने कीमत वृद्धि को दो भागों में वर्गीकृत किया है :

(1) **आंशिक या अर्द्ध-मुद्रा-स्फीति** (Semi-Inflation)—पूर्ण रोजगार से पूर्व मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होने से रोजगार तथा उत्पादन की मात्रा में भी कुछ वृद्धि होती है। इसके फलस्वरूप कीमतों में वृद्धि मुद्रा की मात्रा में हुई वृद्धि के अनुपात में नहीं होती। पूर्ण रोजगार-स्तर के पूर्व कीमत-स्तर में होने वाली वृद्धि को कीन्स ने आंशिक या 'अर्द्ध-मुद्रा-स्फीति' कहा है। यह मुद्रा-स्फीति मुख्यत: उत्पादन के साधनों की गतिशीलता में अड़चन के कारण होती है। इसे 'अड़चन स्फीति' (Bottleneck Inflation) भी कहा जाता है।

(2) **खुली या पूर्ण मुद्रा-स्फीति** (Open or Full Inflation)—पूर्ण रोजगार स्तर तक पहुँचने के पश्चात् मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के परिणामस्वरूप कीमत-स्तर में जो वृद्धि होती है, उसे कीन्स ने खुली, पूर्ण, वास्तविक या निरपेक्ष (Open, Full, True or Absolute) मुद्रा-स्फीति कहा है। इसका कारण यह है कि प्रभावपूर्ण माँग के बढ़ने पर भी वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होना सम्भव नहीं होता क्योंकि उत्पादन के सभी साधन काम पर लगे होते हैं।

डिलर्ड के अनुसार, "वास्तविक मुद्रा-स्फीति तब होती है जब वर्तमान कीमतों के आधार पर पूर्ण रोजगार की अवस्था में उपभोग तथा पूँजीगत पदार्थों के लिए प्रभावपूर्ण माँग कुल उत्पादन के मूल्य से बढ़ जाती है।"

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि "यद्यपि आंशिक स्फीति की घटना अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार बिन्दु से पूर्व उत्पन्न हो सकती है, परन्तु वास्तविक या पूर्ण स्फीति की घटना केवल पूर्ण रोजगार की अवस्था के विद्यमान होने के उपरान्त ही उत्पन्न होगी।"

पूर्ण आंशिक मुद्रा-स्फीति को हम संलग्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। चित्र में O बिन्दु के पूर्व कीमतों में वृद्धि के साथ-साथ रोजगार व उत्पादन में भी वृद्धि होती रहती है, इसलिए सैद्धान्तिक दृष्टि से पूर्ण स्फीति की अवस्था उत्पन्न नहीं होती है। O बिन्दु के पश्चात् OB पूर्ण स्थिति की अवस्था दर्शा रहा है।

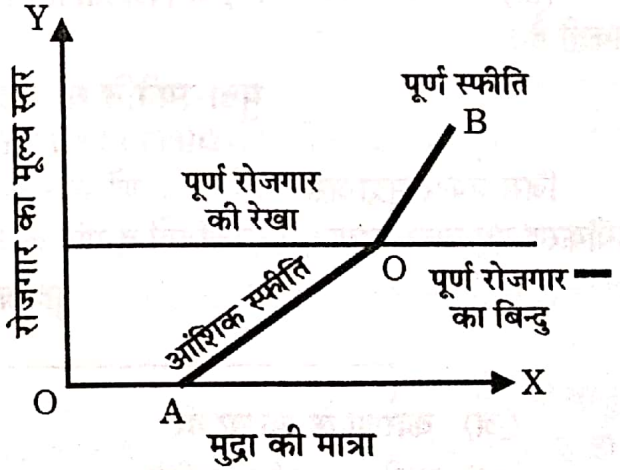

चित्र 5.1

लन्दन इकॉनामिस्ट के शब्दों में, "पूर्ति की सीमा समाप्त होने पर, हर वस्तु की पूर्ति से माँग की अधिकता को मुद्रा-स्फीति कहते हैं।"

कीन्स की परिभाषा के अनुसार 'मुद्रा-स्फीति' शब्द भारत जैसे विकासोन्मुख देश पर भी लागू किया जा सकता है जहाँ मनुष्यों और संसाधनों (Resources) को बेकारी और कीमतों में स्फीतिक वृद्धि साथ-साथ रहते

1 "Inflation is a stage in which the volume of money is falling *i.e.* price are rising." —Crowther
2 "The stage in which there is over issue of currency is called inflation." —Hawtrey
3 "Inflation is a steady and sustained rise in price." —Milton Friedman

Scanned with CamScanner

हैं। ऐसा अनेक अड़चनों व बाधाओं के कारण होता है; जैसे—पूँजी की कमी, कौशल व तकनीकी ज्ञान का अभाव, कच्चे माल की कमी, यातायात के साधनों का अभाव आदि। इन बाधाओं के कारण मूल्य वृद्धि एक निश्चित अवस्था के बाद उत्पादन में वृद्धि नहीं करती, चाहे वह देश पूर्ण रोजगार की व्यवस्था को न पहुँच पाया हो।

उपर्युक्त विवेचन से हमें मुद्रा-स्फीति की निम्न विशेषताओं का आभास मिलता है :

(i) मुद्रा-प्रसार एक **गतिशील प्रक्रिया** (Dynamic Process) है जिसे दीर्घ अवधि में ही अनुभव किया जा सकता है।

(ii) स्फीति एक अवस्था नहीं अपितु **एक प्रवृत्ति** है (Inflation is not a State, but a Trend)। यदि मूल्य एक ऐसे स्तर तक बढ़ गया है जिस पर मजदूरी और लागत जैसी अन्य सभी बातें समंजित हो गयी हों तो स्फीति नहीं होगी।

(iii) स्फीति की प्रवृत्ति संचयी व **स्वतः पूर्ति** (Self-stimulating) वाली होती है। मूल्य वृद्धि के फलस्वरूप मुद्रा की क्रय-शक्ति में कमी हो जाने के कारण प्रचलन में मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करना स्वाभाविक बात हो जाती है जिससे लोगों की मौद्रिक आय बढ़ती है। अतः मूल्य में वृद्धि खर्च करने वालों की आदमनी को पुनः बढ़ा देती है जिससे वे अधिक व्यय करने में असमर्थ हो जाते हैं। फलतः मूल्य में अनिवार्यतः और अधिक वृद्धि हो जाती है। यह क्रिया-प्रतिक्रिया चलती रहती है।

(iv) मुद्रा-प्रसार एक **मौद्रिक घटना** (Monetary Phenomenon) है जिसका अभ्युदय सामान्यतया मुद्रा की अत्यधिक पूर्ति के कारण होता है। अतः सामान्य आवश्यकताओं से अधिक मुद्रा की मात्रा का प्रसारण करना मुद्रा-स्फीति का प्रमुख कारण है।

(v) मुख्य रूप से मुद्रा-प्रसार एक **आर्थिक घटना** (Economic Phenomenon) है जो एक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत फलित (Originate) होती है और आर्थिक शक्तियों की प्रतिक्रिया (Interaction of Economic Forces) द्वारा बलवती होती है।

Scanned with CamScanner